Research Report Brief 6

मैनेज - कृषि विस्तार
नवोन्मेशन, सुधार एवं
एग्रिप्रेन्यूरशिप का केन्द्र
जनवरी, 2018

कृषि के भविष्य की अभिकल्पना: युवा एवं सोशल मीडिया का परिप्रेक्ष्य

मोहित कुमार, सुचिरादीप्ता भट्टाचार्जी और सरवणन राज

प्राक्कथन: विश्व की आबादी वर्ष 2050 तक 9 बिलियन तक पहुंचने की आशंका है। इसी प्रकार युवाओं (15 से 24 वर्षों की आयु वाले) की संख्या में भी वर्ष 2050 तक 1.3 बिलियन तक की वृद्धि होने की संभावना है जो कि वैश्विक आबादी में लगभग 14 प्रतिशत होगा। इनमें से अधिको का जन्म अफ्रीकी एवं एशिया के विकासशील देशों में हुआ है और आधे से अधिक जनता अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही वास कर रही है। भारत की कुल आबादी में से युवाओं की आबादी (15-24 वर्ष) एक-पांचवा हिस्सा (19.1%) बनती है। भारत में जानी मानी सोशल नेटवर्क फेसबुक के 241 मिलियन (17.95%) वार्षिक औत्सहिक उपयोग कर्ता है। फेसबुक और व्हाट्सएप सोशल मीडिया में अधिक स्थान प्राप्त कर चुके है जबकि Google+ का उपयोग अपने आप कम होते जा रहा है। विश्व स्तर पर मोबाइल ही फेसबुक के विकास और रेवेन्यू का बढ़ा रहा है। उत्तर प्रदेश राज्य भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है और विश्व में अधिक आबादी वाला राष्ट्रीय भूभाग माना जाता है। सर्वाधिक आबादी वाला यह राज्य देश के उत्तरी क्षेत्र में है जिसमें लगभग 200 मिलियन परिवार है और (15-24 आयु वर्ग) युवाओं की आबादी लगभग 41 मिलियन है।

अध्ययन का क्षेत्र : सोद्देश्य उत्तर प्रदेश राज्य का चयन किया गया था और युवाओं की जनसंख्या के आधार पर इस अध्ययन हेतु इन जिलों (कानपुर एवं लखनऊ) का चयन किया गया है।

विधि: वैयक्तिक साक्षात्कार विधि का उपयोग करते हुए कृषि एवं तत्संबंधी क्रियाकलापों में लगे हुए 80 ग्रामीण युवाओं से गुणात्मक एवं गणात्मक डैटा का संकलन कर विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष: अधिकांश ग्रामीण युवा (68.75%) धान और गेहूं की कृषि करने में रुचि दिखाया है, इसके बाद युवा जैवी कृषि, डेयरी, सब्जी, फल, आम व आलू के उत्पादन में रूचि दिखा रहे है।

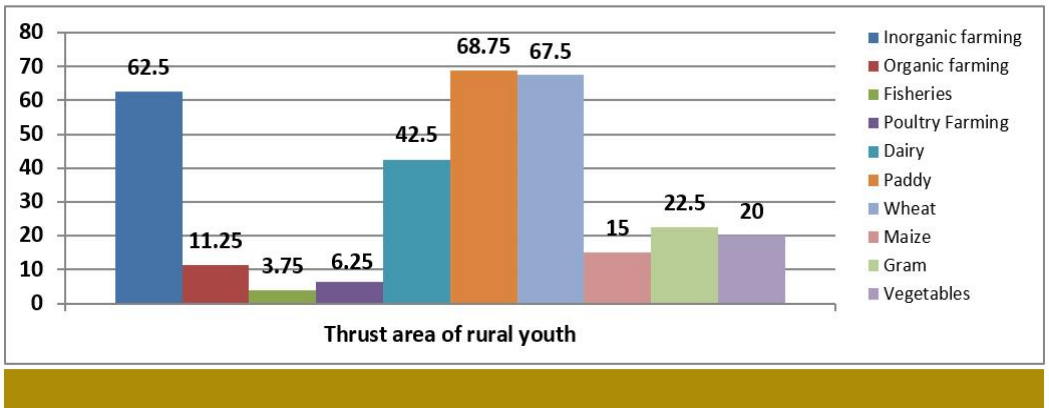

चित्र. 2 चित्र ग्रामीण युवाओं का "ग्रामीण कृषि" कार्यक्रमों/नीतियों की ओर जानकारी को दर्शाता है। अधिकांश ग्रामीण युवा कृषि ऋण मोचन योजना और मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना, स्किल इंडिया, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना इत्यादि के बारे में जानते है। इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि युवा एवं कृषि पर केन्द्रित कार्यक्रमों / नीतियों पर समान्य जानकारी उन्हें प्राप्त हो रही है।

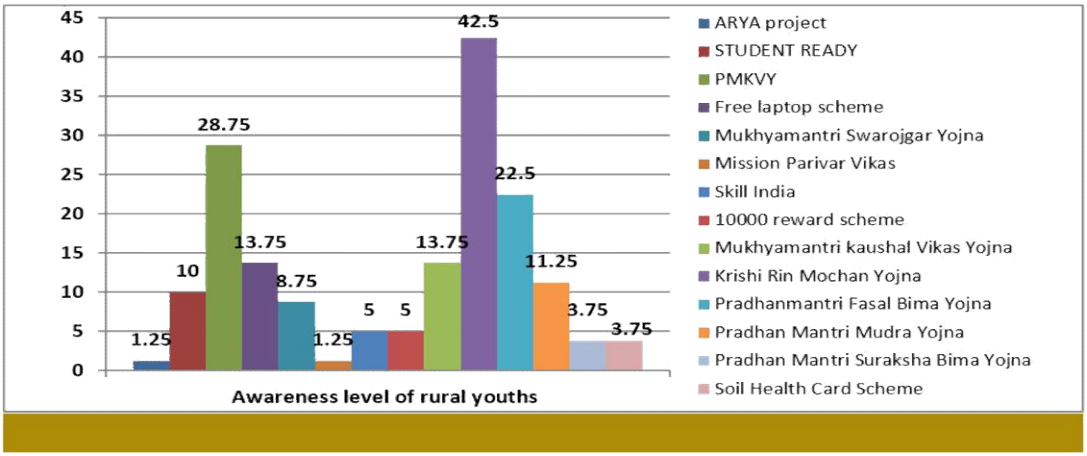

सोशल मीडिया का उपयोग करने में ग्रामीण युवाओं द्वारा उपयोग किया गया प्रथम स्रोत: चित्र: 3 ग्रामीण युवाओं द्वारा सोशल मीडिया के लिए उपयोग किए सभी स्रोतों को दर्शाता है। अधिकतर ग्रामीण युवा उस सुविधा का उपयोग कर रहे थे जिसका लगातार उपयोग सोशल मीडिया के उपयोग में अड़चन बना था।

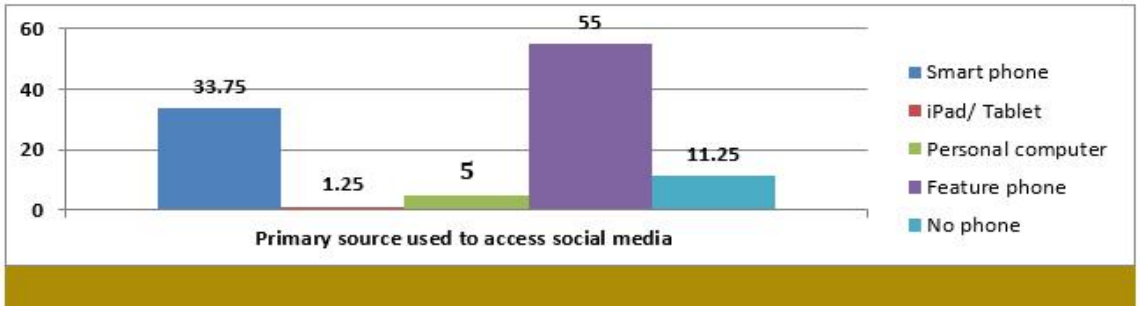

चित्र: 4 से पता चलता है कि अधिकांश ग्रामीण जनता किसी भी सोशल मीडिया साइटों में सम्मिलित नहीं हैं। अधिकांश ग्रामीण युवा केवल मनोरंजन के लिए सोशल मीडिया से जुड़े हैं।

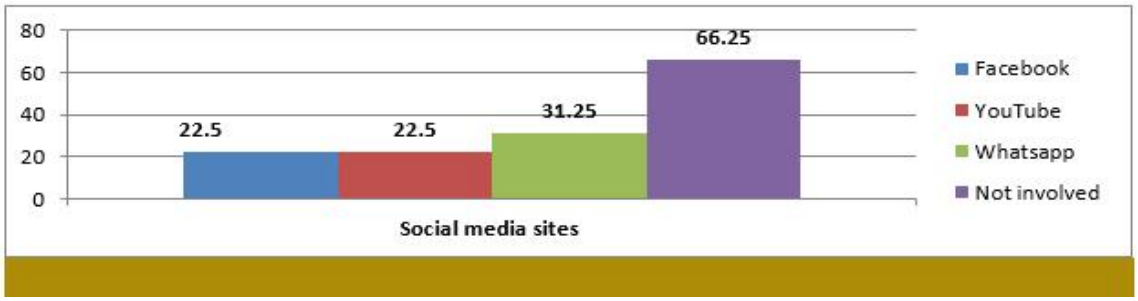

तालिका -1 नर्सरी तैयारी और बीजोपचार जैसे विषयों पर ग्रामीण युवाओं के प्रशिक्षण आवश्यकताओं को दर्शाता है। कृषि की मुख्य प्रक्रियाएं होने कारण, संबन्धित अधिकारी जैसे समेति एवं कृषि एवं तत्संबंधी क्षेत्रों के अधिकारियों द्वारा इस मुद्दों पर निपटान किया जाना चाहिए।

तालिका 1: ग्रामीण युवाओं को बेहतर खेती के लिए प्रशिक्षण की जरूरत

क्र.सं.	प्रशिक्षण आवश्यकताएं	टी.एस	एम.एस	आर
1.	बीजों का चयन	162	2.02	IV
2.	रसायनों से बीजोंपचार	174	2.175	I
3.	नर्सरी की तैयारी	170	2.12	II
4.	उर्वरक का आवेदन	164	2.05	III
5.	उर्वरक का उपयोग की मात्रा का आकलन	158	1.97	V
6.	कीटों एवं रोगों की पहचान	154	1.92	VI

तालिका 2: युवाओं को कृषि में चुनौतियों का सामना करना

क्र.सं.	जिम्मेदारियां	टी.एस	एम.एस	आर
1.	शिक्षा की कमी	147	1.83	VII
2.	आरएईओ, एडीओ द्वारा किसानों की दिशानिर्देशन में कमी	187	2.36	III
3.	युवाओं के लिए नीतियां / केंद्रित नीतियों की संख्या में कमी	185	2.37	II
4.	रोजगार उलब्धता न होने के कारण शहरों में प्रवास	193	2.50	I
5.	परिवारों के विभाजन के कारण प्राप्त भूमि के परिणाम में कटौती	134	1.81	VIII
6.	आधुनिक कृषि तकनीकियों पर प्रशिक्षण की कमी	154	2.08	VI
7.	आईसीटी के उपयोगिता से लाभ पर जानकारी की कमी	160	2.31	IV
8.	कृषि के मंद चलने की अवधि के दौरान वैकल्पिक रोजगार में कमी	168	2.18	V

तालिका: 2 द्वारा ग्रामीण युवाओं द्वारा सामना की जा रही मुख्य समस्याओं में प्रवासजाना और युवाओं में प्रवास जाना और युवाओं का नीतियों का केन्द्र बिन्दु नहीं होना है साथ ही कृषि विकास अधिकारियों और गांव विकास अधिकारियों द्वारा समयानुसार दिशानिर्देश है।

स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में कृषि का जोड़ना चाहिए। उत्तरदाता के द्वारा उत्तम कृषि अभ्यास के लिए कृषि शिक्षा को प्राथमिकता के रूप में स्वीकारा गया है। उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए विभिन्न सुझाव तालिका 3 में प्रस्तुत है।

तालिका - 3: चुनौतियों का समाधान करने और युवा किसानों की (n = 80) भागीदारिता को बढ़ाने के लिए उचित रणनीतियाँ

क्र.सं.	संस्तुतियाँ	टी.एस	एम.एस	आर
1.	युवाओं को सोशल मीडिया के माध्यम से कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त करना चाहिए	166	2.27	IX
2.	कृषि को व्यवसाय के रूप में स्वीकृत करने के लिए परिवारिक सदस्यों का समर्थन	162	2.18	XI
3.	युवा किसानों को सामाज में स्वीकृत करने को वरीयता देना	167	2.19	X
4.	ऋण प्रक्रिया को सरल बनाना	181	2.32	VI
5.	कम कीमत पर फार्म मशीनरी की उपलब्धता	195	2.43	III
6.	ऋण को बिना ब्याज पर उपलब्ध कराना	189	2.42	IV
7.	स्कूली पाठ्यचर्या में कृषि को सम्मिलित करना	210	2.62	I
8.	कृषि में उच्च शिक्षा को दृढ़ बनाना	206	2.60	II
9.	नीति निर्माण में युवाओं को सम्मिलित करना	184	2.35	V
10.	युवा किसानों को एक महीने में एक बार प्रशिक्षण देना चाहिए	174	2.25	VIII

निष्कर्ष और संस्तुतियाँ: इस अध्ययन से पता चला है कि ग्रामीण युवाओं का मुख्य कार्य अजैविक खेती है। शायद ये सब हरित क्रांति के अनुरूप अजैविक कृषि कर्म करने लगे है जिसका कुपरिणाम धीरे धीरे से मृदा स्वास्थ्य पर पड़ा। तथापि, कृषि कर्म में लगे युवाओं ने माना है कि नई तकनीकों के प्रभावी प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि होगी और कृषि लाभदायक एवं सततत बनेगा।

इसके अलावा, उस की तापमान और जलवायु की परिस्थितियों के अनुसार धान और गेहूं फसलों को ग्रामीण युवाओं द्वारा उगाए जाते है। तथापि, इस अध्ययन से पता चला कि जानकारी युवाओं को नहीं होना एक समस्या है। इस अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि अधिकतर युवा सोशल मीडिया से जुड़े नहीं है और साधारण फोन का इस्तेमाल कर रहे है और वे स्मार्ट फोन उपयोग करना नहीं जानते। इस अध्ययन में यह भी देखा गया है कि कृषि करने वाले और किसान में आई सी टी टूल्स एवं उपकरणों की उपयोगिता के बारे में जानकारी से वंचित है। नवीन कृषि तकनीकियों संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अत्यंत आवश्यकता है और ग्रामीण युवाओं को उनका उपयोग करना चाहिए। इसी तरह, ग्रामीण युवाओं को धान एवं गेहूं के फसलों के खेती करने पर प्रशिक्षण देना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए सरकार को प्रशिक्षणों की जिम्मेदारी केवीके, राज्य कृषि विश्वविद्यालय तथा एनजीओं को सौंपना चाहिए जिससे वे युवाओं के माध्यम से कृषि फार्म में परिवर्तन लाया जा सके।

सरकार को केवीके द्वारा प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशेष मंच तैयार करना चाहिए। महत्वपूर्ण बात यह है कि, अपनी अपनी विवश्ताओं के कारण कृषि से जुड़े युवाओं को कृषि कर्म में बनाए रखने के लिए कृषि संबंधी नीतियों को मजबूत बनाना चाहिए। सरकार ग्राम पंचायतों संबंधी भूमि को लीज पर युवाओं में बांट सकती है, जो कि युवाओं को कृषि की ओर उन्हें आकर्षित करने का एक तरीका है।

Complete report on 'Reshaping the future of agriculture: A youth and social media perspective' is available at www.manage. gov.in

Mohit Kumar is a MANAGE Intern and Ph.D Research Scholar at Chandra Sekhar Azad University of Agricultue and Technology, Kanpur, Uttar Pradesh (mohitmayapur404@gmail.com)

Suchiradipta Bhattacharjee is MANAGE Fellow at National Institute of Agricultural Extension Management (MANAGE), Rajendranagar, Hyderabad, Telangana, India (suchiradipta@hotmail.com)

Saravanan Raj is Director (Agricultural Extension) at National Institute of Agricultural Extension Management (MANAGE), Rajendranagar, Hyderabad, Telangana, India (saravananraj@hotmail.com)

The research report is based on the research conducted by Mr. Mohit Kumar as MANAGE Intern under the MANAGE Internship Programme for Post Graduate students of Extension Education.

Correct citation: Mohit, K., Suchiradipta, B., and Saravanan, R. 2018. Reshaping the future of agriculture: A youth and social media perspective. Research Report Brief 6, MANAGE-Centre for Agricultural Extension Innovations, Reforms, and Agripreneurship (CAEIRA), National Institute of Agricultural Extension Management, Hyderabad, India.

Disclaimer: The views expressed in the document are that of the authors based on the research conducted and are not necessarily those of MANAGE or the officials interacted with during the study.

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का संगठन)
राजेंद्रनगर, हैदराबाद - 500 030,
तेलंगाना राज्य, भारत www.manage.gov.in